हिंदी सिनेमा और विकलांगता

रोजी दण्डसेना[*]
rosy18558@gmail.com

शोध सार:-

विशुद्ध मनोरंजन से इतर सिनेमा का समाज के प्रति चिंतन, सचेतना, संवेदनशीलता जैसे और भी प्रतिबद्धताएं हैं। जो सिनेमा के महत्व को और अधिक बढ़ा देते हैं। सिनेमा हाशिए के समाज की आवाज है। आज 'विकलांगता' के प्रति सचेतनता की आवश्यकता और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। ऐसे में समाज के अनेकानेक क्षेत्रों के समान सिनेमा जैसे सशक्त और प्रभावोत्पादक संप्रेषणीय माध्यम में विकलांगता की स्थिति एक अत्यंत संवेदनशील मुद्दा है। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। अपने स्थिति और परिवेश के अनुरूप प्रत्येक व्यक्ति की अपनी दृष्टि, अपना नजरिया होता है। कह नहीं सकते कि जो बात किसी के लिए हंसी मजाक का विषय हो सकता है वही किसी और के मर्मांतक पीड़ा का कारण बन सकता है। हिंदी सिनेमा में विकलांगता के दोनों ही पहलुओं की चर्चा करते हुए 'संवेदना' के 'हीनता' से लेकर 'शीलता' तक के व्यवधान का सूक्ष्मतर मीमांसा प्रस्तुत करना ही इस शोध आलेख का धेय है।

बीज शब्द:- विकलांगता, सिनेमा, फिल्म, फ्रेम, संवेदनशीलता, किरदार

सिनेमा को साहित्य का दृश्य-श्रव्य रूपांतरण कहा जा सकता है। साहित्य के समान सिनेमा भी समाज के लिए दर्पण का काम करता है। साहित्य के समान सिनेमा भी अपने समाज का अनुगूंज बनकर दर्शक को देश और काल के विविध सरोकारों से जोड़ने का काम करता है। समाज के ज्वलंत समस्याओं को उभारने से लेकर समाधान का मार्ग दिखाने तक और फिर विविध संवेदनशील मुद्दों के प्रति सचेतनता और चिंतन मनन के अवसर बनाने तक सिनेमा एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरा है। 'बॉलीवुड' के शुरुआती फिल्मों से लेकर आज तक के सफर में 'बॉलीवुड' ने भारतीय समाज और संस्कृति तथा उसके सही गलत, दुर्बल-सशक्त, निंदनीय-प्रशंसनीय इत्यादि सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला है। हिंदी सिनेमा प्रबुद्ध वर्ग के साथ-साथ उस वर्ग तक को भी सामाजिक मुद्दों से जोड़ता है, जो शिक्षा से वंचित होने के कारण साहित्य से कोसों दूर रहा है। हिंदी सिनेमा भारत की भाषाई अवरोध की दीवार तोड़कर जन मानस को प्रभावित करने का एक सशक्त माध्यम बनकर खड़ा है। आधुनिक साहित्य के समान हिंदी सिनेमा ने भी मनोरंजन के साथ-साथ समस्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा वैचारिक समस्याओं और संभावनाओं से खुद को जोड़ा। जाति प्रथा, विधवा विवाह, दहेज प्रथा, सामाजिक रूढ़ियों और अंधविश्वास जैसे समस्याओं को तो उकेरा ही साथ ही उनके समाधान पर भी विचार किया। बॉलीवुड ने दर्शकों के लिए ज्ञान विज्ञान के द्वार भी खोल दिए। 'विकलांगता' (disability) जैसे मुद्दे भी इसके परिधि के बाहर नहीं रहे। जैसे हर सिक्के के दो पहलू होते हैं वैसे ही सिनेमा और विकलांगता की आपसी संबंध के भी अनेक सकारात्मक और नकारात्मक पहलू देखने को

---

[*] **हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद**

मिलते हैं। यह विविधता सिनेमा में अभिनय करने से लेकर पर्दे पर विकलांगता चित्रण तक और फिर समाज पर उसके प्रभाव तक, अनेक आयामों में बटा हुआ है। विकलांग व्यक्तियों के सिनेमा में अभिनय करने का दर एक प्रतिशत से भी कम है। सिनेमा में विकलांग व्यक्ति के किरदार को निभाने वाला अभिनेता अमूमन एक साधारण व्यक्ति ही होता है। इससे लोगों में विकलांग व्यक्तियों के समस्याओं के बारे में सचेतनता तो बढ़ेगी, मगर विकलांग व्यक्तियों के भागीदारी दर पर कोई बढ़ोतरी होने की संभावना नहीं दिखाई पड़ती। दूसरा और सबसे महत्वपूर्ण आयाम के रूप में सिनेमा में विकलांगता के चित्रण (framing of disability) अपने व्यापक प्रभाव उत्पादक पक्ष के कारण अत्यंत विचारणीय है।

पिछले कुछ दशकों में बॉलीवुड ने अपने फिल्मों में विकलांगता को भारी मात्रा में दिखाया है। इनमें से कुछ फिल्में विकलांग व्यक्ति के वास्तविक समस्याओं, असुरक्षाओं, समर्थता और सामाजिक दृष्टि जैसी पहलुओं को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ समाज के आगे रखने का प्रयास किया है वही हिंदी के अनेक फिल्मों पर इस विषय के प्रति संवेदनहींनता के आरोप भी लगाए जाते हैं।

कॉमेडी

विकलांगता जैसे संवेदनशील मुद्दों को फिल्मों में बतौर कॉमेडी चित्रित किया जा रहा है। जिसमें विकलांग व्यक्ति के विकलांगता का मजाक बनाया जाता है। अमूमन हिंदी सिनेमा में हकलाने वाले या मुख व्यक्ति के चरित्र को अत्यंत हास्यास्पद रूप में चित्रित किया जाता है। विकलांगता को साधन के रूप में प्रयोग करके फिल्मों में हास्य रस उद्रेक करने का प्रयास किया जाता है। जैसे 2006 में रोहित शेट्टी के निर्देशन में आई फिल्म **'गोलमाल'** में तुषार कपूर का किरदार इसी का एक उदाहरण है। लकी नाम के इस किरदार से तुषार कपूर के फिल्मी करियर को जो सफलता मिली उसी विषय में तुषार कहते हैं-"यह शुरू में एक प्रयोग था और वह निर्माताओं के साथ यह जानने के लिए उत्सुक थे कि लोग इसे कैसे स्वीकार करेंगे।" पता है लोगों ने विकलांगता के इस व्यंगात्मक किरदार को खूब पसंद किया। लोगों ने तुषार के नकल उतारे, एक मूक व्यक्ति के अभिव्यक्ति के तरीकों का बड़ा स्वाभाविक ढंग से मजाक बनाया गया। छोटे बच्चों से लेकर बड़ों तक ने जब इस मूवी को देखकर किसी मूक व्यक्ति का मजाक में ही सही नकल उतारा होगा तब उक्त विकलांग व्यक्ति की संवेदनाएं किस प्रकार आहत हुई होगी इसका अनुमान लगाना तुषार के लिए संभव नहीं है। हिंदी फिल्मों में ऐसे अनेक डायलॉग भी सुनने को को मिलते हैं जिसमें विकलांगता के जरिए कॉमेडी करने का प्रयास किया गया हो।

त्रासदी

फिल्मों में अक्सर विकलांग किरदारों को बड़े ही त्रासद रूप में दिखाया जाता है। जिस प्रकार 'कोई मिल गया' फिल्म मैं रितिक रोशन को विकलांगता से उबारते हुए एलियन का अत्यंत सुंदर कहानी रचा गया। ऐसी फिल्में परोक्ष रूप से यह संदेश पहुंचाती है की विकलांगता का जीवन जीने योग्य नहीं है। विकलांग व्यक्ति को बार-बार ठीक होते हुए दिखाना ही अनेक हिंदी फिल्मों का हैप्पी एण्डिंग होता है। ऐसी फिल्मों से ये संदेश पहुँचता है की उनमें कोई कमी है, जिसका दूर होना जरूरी है। विकलांगता को मृत्यु से भी बदतर चित्रित किया जाता है। सन् 1975 में आई फिल्म **'शोले'** में संजीव कुमार एक ईमानदार पुलिस ऑफिसर के किरदार में

नजर आते हैं। फिल्म की कहानी में अमजद खान 'गब्बर सिंह' की किरदार में नजर आते हैं जो की एक डाकू होता है। जेल से भागा हुआ गब्बर सिंह अपनी गिरफ्तारी का बदला लेने के लिए संजीव कुमार (ठाकुर साहब/ ईमानदार पुलिस ऑफिसर) की हत्या नहीं करता बल्कि उनके दोनों हाथों को काट देता है।

आत्मनिर्भरता का अभाव

अक्सर फिल्मों में एक व्हीलचेयर पर बैठे व्यक्ति के आसपास उसे लाने और ले जाने वाले किसी व्यक्ति को दिखाया जाता है। यह दिखाया जाता है कि एक विकलांग व्यक्ति को हमेशा किसी और व्यक्ति की सहायता की आवश्यकता रहती है। वह अपने काम तक स्वयं नहीं कर सकता। या कहीं उसके कारण और लोगों का जीवन बाधित होता है। अमूमन विकलांग व्यक्ति के जीवनसाथी को उसके सहारे के रूप में फ्रेम किया जाता है। परंतु वास्तविक जीवन में ऐसा कोई चमत्कार नहीं होता।

रूढ़िवादिता

हिंदी सिनेमा विकलांगता जैसे मुद्दों पर समाज के समान कुछ हद तक रूढ़िवादी है। बॉलीवुड में अनेक stereotype या रूढ़िवादिता भरी हुई है। विकलांगता जैसे मुद्दों पर भी ऐसे ही रूढ़िवादी विचार मिल जाते हैं। अक्सर विकलांग व्यक्ति के स्थिति पर तरस खाते हुए रिश्तेदार तथा आस-पड़ोस के लोग उसके पूर्व जन्म की किसी पाप की आशंका का परिणाम के रूप में विकलांगता को देखते हैं। जो जस का तस पर्दों पर भी उतार दिया जाता है। विकलांगता को एक श्राप के समान फ्रेम किया जाता है। सकुनि, सुर्पनखा आदि पौराणिक किरदारों के आधार पर विकलांगता परदे पर भी खल पात्र को कभी एक आँख से अंधा, तो कभी और किसी विकलांगता से जोड़ दिया जाता है। उदाहरण के लिए **'क्रीश 3'** और 'खलनायक' जैसी फिल्मों। अनेक फिल्मों में दिमागी तौर पर अपरिपक्व व्यक्ति को खल चरित्र के रूप में दिखाया जाता है। जो लोगों के मन में उनके प्रति डर और नकारात्मकता की भावना उत्पन्न करता है।

सिक्के के दूसरे पहलु में एक सकारात्मक पक्ष भी है। जिसकी चर्चा आवश्यक है। **'कोशिश' (1972)** दो विकलांग युवाओं की कहानी है जो एक दूसरे से प्रेम करते हैं और समाज में सम्मान की जिंदगी जीने के लिए संघर्ष करते हैं। इस फिल्म के जरिए विकलांग व्यक्तियों के सामान्य वैवाहिक जीवन जीने में आने वाले कठिनाइयों का चित्रण समाज के विशेष संदर्भ में किया गया है।

बॉलीवुड ने हिंदी सिने जगत को 'ब्लैक', 'स्पर्श तारे ज़मीन' पर, 'बर्फी' जैसी अनेक लोकप्रिय फिल्में दी जिन्होंने न सिर्फ बॉक्स ऑफिस पर अपना कमाल दिखाया बल्कि विकलांगता को बड़े ही संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया। हिंदी सिनेमा के इस संवेदनशील और गंभीर पक्ष की चर्चा किए बिना यह आलेख अधूरा है। ब्लैक, स्पर्श तारे ज़मीन पर जैसी चुनिंदा फील्मों के विशेष संदर्भ में इन्हें समझा जा सकता है।

स्पर्श (1980)

1980 में आई फिल्म 'स्पर्श' एक ब्लाइंड स्कूल के प्रिंसिपल के इर्द-गिर्द घूमती नजर आती है। सिनेमा के केंद्रीय पात्र के रूप में नसीरुद्दीन शाह का किरदार बड़ा ही प्रभाव उत्पादक है। नसीरुद्दीन दृष्टि बाधित बच्चों के स्कूल में प्रिंसिपल है और खुद भी देख नहीं सकते। यह सिनेमा समाज के दया और तरस खाने की

भावना का कड़ाई से प्रतिरोध करता है। सिनेमा में दृष्टि बाधित लोगों के जीवन में आने वाली वास्तविक समस्याओं का स्वाभाविकता से चित्रण किया गया है। साथ ही समाज को दृष्टि बाधित लोगों की कार्य क्षमता, दक्षता और आत्मसम्मान के प्रति सचेतन करता है। सिनेमा का मुख्य उद्देश्य एक दृष्टि बाधित व्यक्ति के स्कूली जीवन से लेकर एक सफल वैवाहिक जीवन तक की झांकी प्रस्तुत करता हुआ यह फिल्म सामाजिक संदर्भ से भी किनारा नहीं करती। इस फिल्म के जरिए दृष्टि बाधित लोगों के आत्मनिर्भरता को बड़े ही स्वाभाविक ढंग से चित्रित किया गया है। कहानी में उनके द्वारा हस्तकला और ब्रेल पुस्तकों के जरिए उनके आत्मनिर्भर बनने के मार्ग को और अधिक सशक्त किया गया है। यह फिल्म अपने समय में लोगों में दृष्टि बाधित बच्चों के शिक्षा और आत्मनिर्भरता के प्रति सजकता की एक क्रांति ले आई।

ब्लैक (2006)

'हेलेन केलर' से प्रभावित ब्लैक फ़िल्म अभिनेत्री रानी मुखर्जी पर फिल्माई गई। आलोच्य फिल्म में रानी मुखर्जी एक आंग्ल भारतीय संभ्रांत परिवार की लड़की मिशैल के किरदार में नजर आती है। 2006 में रिलीज हुई ये फिल्म एक संवेदनशील और दृढ़ मना शिक्षक के कठोर परिश्रम का परिणाम है।

अवश्य ही इस फिल्म के जरिए अनेक माता-पिताओं ने स्पर्श का महत्व को समझा होगा। इस तरह की फिल्में समाज में नवीन चेतना और विकलांगता से जूझ रहे व्यक्ति के मन में असीम विश्वास भर देती है। सिनेमा के ये संवाद उल्लेखनीय है "जिंदगी चाहे गर्भ से जन्म ले या जमीन से उसका सफर तो अंधेरे में ही शुरू होता है, और अंधेरे में ही खत्म होता है। एक दिन हम सबको इसी अंधेरे से गुजरना है और रोशनी तक पहुंचना है।"

यह कहानी असीम आत्मविश्वास और कभी ना हार मानने वाले जज़बे का पोषण करती है। ब्लैक उन कुछ चुनिंदा फिल्मों में से है जिसने मान्यताओं और मुहावरों को बदलकर रख दिया हो। फिल्म में एक जगह रानी मुखर्जी आंखों से सपना देखने की बात का प्रतिरोध करती नजर आती है। जो इस प्रकार है- **"आंखें सपना नहीं देखती, मन सपना देखता है।"**

ब्लैक मूवी एक विकलांग व्यक्ति के मन में उम्र के साथ आने वाली शारीरिक बदलाव और इच्छाओं पर भी प्रकाश डालती है। यह वास्तव में सिद्ध करता है इच्छाओं और आकांक्षाओं का देखने या सुनने से कोई संबंध नहीं है। सिनेमा में मिशैल के शिक्षक के किरदार में अमिताभ बच्चन नजर आते हैं। उनके परिश्रम और दृढ़ मनोबल वास्तव में प्रेरणा का स्रोत है।

तारे ज़मीन पर (2007)

स्पर्श और ब्लैक जैसी फिल्मों की सफलता के बाद 2007 में 'तारे ज़मीन पर' फिल्म रिलीज हुई। फिल्म के निर्माता तथा निर्देशक आमिर खान फिल्म में एक अहम किरदार के रूप में नजर आए। आमिर का किरदार ब्लैक मूवी के अमिताभ बच्चन जैसा ही है इस फिल्म में उन धारणाओं को तोड़ दिए जो मानते हैं कि विकलांगता पर आधारित इस किस्म की फिल्में केवल समाज सेवा के लिए बनाई जाती है। फिल्म 21 दिसंबर 2007 को बड़े पर्दे पर रिलीज हुई और सुपरहिट रही।

फ़िल्म तारे ज़मीन पर, आठ साल के ईशान दर्शील सफ़ारी की कहानी है। ईशान मानसिक रूप से पीड़ित होता है और उसे लगता है कि वह स्कूल के वातावरण में फिट नहीं बैठता। ईशान के इस असाधारण व्यवहार से तंग आकर उसके माता-पिता उसे बोर्डिंग स्कूल भेजना चाहते हैं। उन्हें लगता है ईशान का पढ़ने में मन नहीं लगता। इस फिल्म के जरिएडिस्लेक्सिया जैसी गंभीर और संवेदनशील समस्या पर प्रकाश डाली गई है। ईशान के माता-पिता का उसके '*डिस्लेक्सिया*' से अनजान रहने की घटना बताती है कि, हमारा समाज फिर चाहे वह शिक्षित (मध्यवर्गीय) परिवार ही क्यों ना हो वे विकलांगता जैसे संवेदनशील विषयों से कितना अनजान और अनभिज्ञ है, उक्त फ़िल्म प्रकाश डालती है।

बोर्डिंग स्कूल में ईशान की स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आता। फिर एक दिन चित्रकला सिखाने के लिए एक शिक्षक के रूप में ईशान की जिंदगी में आमिर खान का आगमन होता है फिल्म में जो रामशंकर निकुंभ का किरदार निभाते हुए नज़र आते हैं। बाद में आमिर खान द्वारा ईशान की समस्या को समझे जाने और उसे एक उपयुक्त वातावरण देने का प्रयास करने की कहानी दिखाई जाती है। जिसका परिणाम स्वरूप ईशान न केवल पेंटिंग कंपटीशन में अव्वल आता है बल्कि पढ़ाई लिखाई के प्रति भी उसकी दिलचस्पी बढ़ती है।

अमूमन घरों में बच्चों पर धीरे-धीरे बोलने तथा पढ़ने या शब्दों को देरी से सीखने, वर्तनी पहचान में भूल करने जैसी समस्याओं के लिए माता-पिता से डांट सुनना और मार खाना पड़ता है। आज की दौड़ती भागती जिंदगी में तो अच्छे ग्रेड लाने की एक दौड़ हर घर के बच्चे को दौड़नी पड़ती है। माता-पिता डिस्लेक्सिया जैसे किसी समस्या का कल्पना भी नहीं करते उनके दृष्टि में उनका बच्चा पढ़ने लिखने में मन नहीं लगाता। इस फिल्म को देखने से बच्चों तथा माता-पिता दोनों में इस तरह की समस्याओं के प्रति सजगता बढ़ती है।

हिंदी सिनेमा में विकलांगता को फ्रेम करने का एक तीसरा रूप भी है। बॉलीवुड में ऐसी अनेक फिल्में हैं जो विकलांग व्यक्ति के उपलब्धियों को तिल का ताड़ बनाकर और राई का पहाड़ बनाकर दिखाती हैं। जीवन में बड़ी-बड़ी उपलब्धियां तो हर कोई हासिल करता है। छोटी बड़ी समस्याएं भी सबकी होती ही है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी समस्या और परिस्थितियों से जूझते हुए ही अपने जीवन में कुछ हासिल करता है। आज प्रत्येक विकलांग व्यक्ति समाज से केवल समानता की मांग करता है। वास्तविक जीवन से लेकर सिनेमा के पर्दे तक रियल हो या रील दोनों ही दुनिया में उसे चाहिए समानता , स्वाभाविकता और संवेदनशीलता।

स्पर्श 1980 जैसी फ़िल्में समानता की भावना की ही पैरवी करती है। जिस प्रकार नसीरुद्दीन शाह बारंबार लोगों के मन में अपने प्रति तनिक भर दया या करुणा की भावना महसूस करते ही जुंझला उठते हैं, क्या यह प्रतिरोध नहीं? एक दृष्टिबाधित प्रिंसिपल अपने स्कूल के बच्चों के लिए दया और करुणा से भरे समाजसेवियों की भीड़ नहीं चाहता, बल्कि उसे तलाश है उस स्पर्श की जिसमें आत्मियता हो। नसीरुद्दीन बारंबार कहते हैं उन्हें अपने स्कूल के बच्चों के लिए दोस्तों की जरूरत है। जो स्कूल आकर बच्चों से घुले-मिले, खेलें, दोस्ती करें उन्हें कहानी सुनाएं। नसीरुद्दीन शाह की आवाज में जैसे प्रत्येक विकलांग व्यक्ति समाज से अपने समानता के अधिकार की मांग कर रहा है। ऐसी फिल्में समाज पर एक सकारात्मक प्रभाव डालते हुए लोगों के मन में संवेदनशीलता और सचेतनता की पहल कर सकती है।

संदर्भ:-

1. Harsh Mahaseth. (2019, April, 5). *The Disability Narrative in Indian Cinema. Film Matters Magazine* Retrieved from *https://www.filmmattersmagazine.com/2019/04/05/the-disability-narrative-in-indian-cinema-by-harsh-mahaseth/*
2. v-shesh. (2023, July, 28). From Prejudice to Pride: Evolving Representations of Disability in Cinema. The Better India https://thebetterindia.com/325545/must-watch-films-and-shows-on-disability-pride-and-representation-in-cinema/
3. Cinemas of Isolation: Disability and Film Theory. Nord Media Network. (2022, Nov, 27). https://nordmedianetwork.org/latest/call-for-papers/cinemas-of-isolation-disability-and-film-theory/
4. हमारा सिनेमा विकलांगों को बहुत प्रॉब्लमैटिक तरीके से दिखाता रहा और हम देखते रहे, हंसते रहे. (2023, July, 21). The Lallantop. Retrieved from https://www.thelallantop.com/entertainment/post/representation-of-disability-in-indian-cinema
5. Evelyn Mogk Marja. Essays on Disability in Film and Television. McFarland& inc Publishers, North Carolina, London. Retrieved from https://joyojeet.people.si.umich.edu/wp-content/uploads/2016/07/Physical-Disability-and-Indian-Cinema.pdf
6. Shemaroo Movies. (2018, May, 24). [Video] Sparsh (HD & Eng Subs) Hindi Full Movie - Naseeruddin Shah - Shabana Azmi - Bollywood Classic Movies “Youtube” https://www.youtube.com/watch?v=fKjjwYk14A8
7. Hardy World. (2024, April, 2). [Video] Black 2005 movie “Youtube” https://www.youtube.com/watch?v=h_z_6L2Vw6I
8. Karthik Sankaran. (2020, May, 8). [Video] Taare Zameen Par - Amir Khan Movie - Every child is special - With English Subtitles “Youtube” https://www.youtube.com/watch?v=3Z14uE7U0HY